तपसाधना करने वाले सम्मानीय श्रावकगण

पदमा राजेन्द्र जैन
इन्दौर

रेशू-निशांत जैन
इन्दौर

नेहा-दीपक जैन
इन्दौर

रेखा-अशोक जैन
इन्दौर

नागेन्द्र जैन
इन्दौर

सौरभ जैन
इन्दौर

सुधीर धमसैया
इन्दौर

बिंजल-आशीष जैन
इन्दौर

पिंकी शैलेष जैन
इन्दौर

अंजली विनय जैन
भोपाल

नयना मुकेश जैन
भोपाल

नीतू जैन
कानपुर

आशीष जैन
मणीनगर

नीता राजीव जैन
भोपाल

मैना जयकुमार जैन
इन्दौर

विनम्र श्रद्धांजली

* श्री राजेश बाबूलाल की धर्मपत्नी **श्रीमती ममता जैन** का निधन 16 जुलाई को इन्दौर में हो गया । आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में काफी रुचि लेती थी ।

* श्री स्वदेशीलालजी की धर्मपत्नी **श्रीमती पुष्पा जैन** का निधन इन्दौर में 1 अगस्त को हो गया । आपके परिवार ने आपकी स्मृति में गोलालारीय समाज मंदिर को ₹5000 , गोलालारीय समाज न्यास को ₹ 5000 व गोलालारीय दर्शन पत्रिका को ₹ 1100 दिये ।

* स्व. डॉ. बाहुबली कुमार जैन के सुपुत्र तथा डॉ. आलोक, डॉ. अपूर्व जैन के पिता **डॉ. अशोक कुमार जैन** का आकस्मिक निधन 30 अगस्त को ललितपुर में हो गया । आप सामाजिक कार्यों में रुचि रख यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहे ।

* **श्रीमती निर्मलादेवी जैन** पत्नि स्व. निर्मलचंद जैन का स्वर्गवास 14 सितम्बर को हो गया है ।

* स्व. श्री कामताप्रसाद के छोटे पुत्र **श्री अभय जैन** का निधन 26 सितम्बर को हो गया ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा।

समाज ने खोया जीवट और कर्मठ व्यक्तित्व

सेठ चम्पालाल जैन नौहरकलां की पृष्ठभूमि ललितपुर के नौहरकलां गांव से है । ग्रामीण परिवेश के प्रतिष्ठित परिवार श्री गनपतलालजी एवं श्रीमती कस्तूरीबाई के छोटे पुत्र के रुप में आपने अपनी बौद्धिक क्षमता, कुशाग्र बुद्धि व कुशल व्यवसायिक क्षमता के बल पर ग्रामीण परिवेश से हटकर कुछ ऐसा करने का दृढ़निश्चय कर रखा था जिसके आधार पर आप धार्मिक कार्यों सहित समाज हित में संलग्न रहकर अधिक से अधिक लोगों की मदद कर सके । आपके हृदय में समाज व समाजजनों के प्रति सदैव स्नेह व सहयोग की भावना रही । किसी भी धार्मिक व सामाजिक आयोजन में या समाज के किसी भी सदस्य को किसी भी प्रकार की मदद की आवश्यकता रही हो आपने हर समय खुले मन से बढ़ चढ़कर सहयोग किया । कई धार्मिक व सामाजिक आयोजन के अवसरों पर आयोजकों को दृढ़ता पूर्वक कह देते कि अच्छा काम करो, खर्चे की चिंता मत करो मै हूँ, आयोजन ऐसा हो कि सब लोग याद रखें । आप की दृढ़ता, स्पष्टवादिता व तत्काल निर्णय लेने की क्षमता सभी को सदैव आपकी याद दिलाती रहेगी । सादा जीवन उच्च विचारों को अपने व्यक्तित्व में समाहित करते हुए आपने निरंतर सफलता के नए आयाम गढ़े है, उसकी परिणति यह है कि चिर निद्रा में जाने के पूर्व आपने अपने परिवार, समाज व देश के कई धार्मिक व सामाजिक संगठनों में उत्कृष्ट स्थान बना कर अपनी अमिट छाप छोड़ी है । रेलवे ठेकेदार के रुप में आपका कार्य क्षेत्र झांसी व भोपाल रेल मंडल रहा । कार्य के प्रति समर्पण व ईमानदारी की भावना के दम पर आप उत्तरोत्तर प्रगति करते रहे । समवानुसार कार्य में विस्तार के साथ आपके तीनों पुत्रों ने सहयोग प्रदान कर इस कार्य के अतिरिक्त अन्य कई संस्थान स्थापित कर उन्हें शिखर पर पहुंचाया । धार्मिक व सामाजिक कार्यों में पूर्ण मनोयोग से खुले मन से अपनी सहभागिता प्रदान करना आपकी जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा था जो अब आपके परिवार की विरासत बन गई जिसे आपके पुत्र बखूबी निभा रहे है श्री प्रदीप कुमार व श्री प्रसन्न कुमार भोपाल, ललितपुर, झांसी व बुंदेलखंड के साथ साथ देश भर के कई तीर्थ क्षेत्रों पर मुक्त हस्त से दान देने की परम्परा को बनाए रखा है । श्री देवगढ़जी के पुनरोद्धार के साथ गौशाला, धर्मशाला, औषधालय व सर्वसमाज के लिए व्यायाम शालाओं का निर्माण कर उन्हें निरंतर संचालित करने के लिए आपका परिवार सदैव तत्पर रहता है ।

आपका विवाह देवरान के सिंघई श्री हजारीलाल की सुपुत्री गेंदाबाई से हुआ । आपके तीन पुत्रों में से एक पुत्र श्री पवन व पपौत्र का निधन एक दुर्घटना में हो गया जिसका आपको गहरा आघात लगा परन्तु आपने दृढ़ता के साथ सामाजिक गतिविधियां बरकरार रखी । आपकी प्रेरणा से आपके परिवार ने समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए देश के प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्रों की वंदना हेतु प्रतिवर्ष रिजर्व बस के माध्यम से यात्रा का आयोजन करा । आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों की लड़कियों की शिक्षा व उनके विवाह में हर तरह का आर्थिक सहयोग देकर सच्चे मायनों में बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं की भावना को सार्थक करा है ।

गंभीर बीमारी से पीड़ित समाजजन को उचित परामर्श व चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में आपने कभी संकोच नहीं करा, हर संभव सहायता प्रदान कर निरंतरता बनाए रखी ।

जैन धर्म की आत्मा के अनुरूप "जिओ और जीने दो" की भावना के साथ आपने समभाव से समाज के हर वर्ग की सहायता की । आपके मन में कभी भी पद की लालसा नहीं रही, तीर्थ क्षेत्रों के साथ शिक्षा संस्थानों की आपने दिल खोलकर मदद की । श्री वर्णी जैन इंटर कॉलेज को सहयोग प्रदान कर अपने आप को सौभाग्यशाली मानते थे। नगर में आयोजित 6 पंच कल्याणक में आपकी सक्रिय भूमिका रही । देवगढ़ में मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज जी के सानिध्य में पंच गजरथ महोत्सव में सक्रिय भूमिका के साथ एक मंदिर का पुनरुद्धार कराया । अतिशय क्षेत्र सेरोनजी में जिनबिम्ब की स्थापना, ललितपुर में नव गजरथ में मुख्य पात्र बनकर 1008 भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा स्थापित करायी । सिरोंजजी व पचाजी में संपन्न पंचकल्याणक में मुक्त हस्त से दान कर गौशाला व अन्य कार्यों में सहयोग प्रदान करा । विश्व की पौराणिक व आध्यात्मिक धरोहर को स्वयं में समेटे हुए अतिशय क्षेत्र देवगढ़जी में को आपने व्यावसायिक सेवानिवृत्ति के बाद कर्मभूमि के रुप में चुना । इस क्षेत्र को पर्यटन के रुप में विकसित कर दर्शनार्थियों की संख्या में वृद्धि करने का श्रेय आपको ही जाता है । गत 13 वर्षों से अध्यक्ष पद का दायित्व संभालते हुए आपने ललितपुर से निशुल्क बस व भोजन व्यवस्था का मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी के समक्ष लिया गया संकल्प अंतिम समय तक अनवरत जारी रहा । आप अखिल भारतीयर दिगम्बर जैन गोलालारीय परिषद के संस्थापक व आजीवन राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे । आपकी सदा यही इच्छा रही कि गोलालारीय समाज का संगठन सक्रिय व सशक्त बने। इन्दौर व भोपाल में आयोजित गोलालारीय परिषद की बैठक में गोलालारीय दर्शन के संपादक मंडल से चर्चा के समय आपने व्यक्त की थी प्रत्येक नगर में गोलालारीय समाज की सक्रिय संस्था का निर्माण हो और उन संस्थाओं के प्रतिनिधि राष्ट्रीय स्तर की सक्रिय व सशक्त गोलालारीय परिषद का संचालन करे व समग्र जैन समाज में अपने समाज को गौरवांवित करे परन्तु कुछ कारणों से यह संगठन उनकी इच्छानुरुप कार्य करने में सफल नहीं हो सका । आप गोलालारीय दर्शन के शिरोमणि संरक्षक व परामर्श प्रमुख भी थे । आपने अन्य संस्थाओं अखिल भारतवर्षीय तीर्थसभा के आजीवन सदस्य, श्री सेरोनजी अतिशय क्षेत्र के आजीवन संरक्षक सदस्य, विराग जन कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक संरक्षक, ललितपुर दिगम्बर जैन समाज द्वारा संचालित गौशाला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री ललितपुर दिगम्बर जैन गोलालारीय समाज के वरिष्ठ संरक्षक, श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ अटा मंदिर के पूर्व प्रबंधक सहित उत्तर रेलवे ठेकेदार एसोसिएशन के चार्टर्ड अध्यक्ष रहकर अपना बहुमूल्य योगदान दिया। चिरनिद्रा में विलीन होने के पूर्व कुछ घंटो तक परिवार व अन्य लोगों से सहृदय आत्मीयता से मिलकर देवदर्शन के 6 घंटे पश्चात 1 सितम्बर को देवलोकगमन हो गया । इस कर्मठ, जुझारु, स्पष्ट वक्ता श्री चम्पालालजी नौहरकलां के निधन का समाचार जिसने भी सुना वह स्तंब्ध रह गया । **- संपादक**

अखिल भारतीय दिगम्बर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंपालालजी के आकस्मिक अवसान से पूरा समाज आहत एवं स्तब्ध है । आदरणीय सेठजी ने अध्यक्ष पद पर रहते हुए कई सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किए । इसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है । उनकी कमी समाज को हमेशा खलती रहेगी ऐसे दानवीर सेठ श्री आज हमारे बीच नहीं हैं । उन्होंने समाज का सदैव दिल खुलकर सहयोग किया । स्थानीय संगठनों को किस प्रकार से मजबूत किया जाये यह भावना उनमें हर समय रहती थी क्योंकि स्थानीय संगठन के मजबूत होने पर राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत संगठन का निर्माण किया जा सकेगा । उनके विचार थे कि राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारियों को आगे बढ़कर स्थानीय संगठन को मजबूत करने की कार्यवाही कर एक सशक्त व सुदृढ़ राष्ट्रीय संगठन का निर्माण करना चाहिये जो समग्र जैन समाज में अपनी अलग पहचान बनाकर कंधे से कंधा मिलाकर जैन समाज की जवाबदारियों को निभा सके । अपने जिस संस्था को उन्होनें बच्चे की तरह पाला बड़ा किया, आज उनकी अनुपस्थिति में अखिल भारतीय गोलालारीय परिषद के सभी पदाधिकारियों को मनन करना चाहिए कि हमारी संस्था सुचारू रूप से कैसे चले एवं संगठात्मक कार्य व संस्था का संगठन मजबूत कैसे बने? इस पर सही दिशा में प्रयास हो, वही सेठ श्री चम्पालालजी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी । - संजीव जैन, अहमदाबाद

सादर अनुरोध - अपने परिजनों की स्मृति में गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए दान देकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें ।